सिंदबाद

की कहानी

सिंदबाद की कहानी

धर्मपाल शास्त्री

समाज शिक्षा प्रकाशन
कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

एक आँखे वाले राक्षस ने कप्तान को मार डाला

बीचोबीच। वह कोयले के समान जल-सी रही थी। उसके दाँत विशेष रूप से लम्बे और तेज थे; उन्हें देखते ही डर लगता था। हममें से कई तो घबराकर वहीं बेहोश हो गए। जब मैं होश में आया तो देखा कि वह राक्षस आँगन में बैठा हमें घूर रहा है। बहुत देर देखने

यात्रियों ने रोक चिड़िया का अंडा तोड़ना शुरू किया

घुमाई किन्तु मुझे अपना-पराया कोई भी वहाँ दिखाई न दिया। अपने स्वभाव के अनुसार मैं उठकर टापू में इधर-उधर की जगह देखने लगा। टापू क्या था, एक हरा बगीचा था। हरे वृक्षों और

बूढ़ा गर्दन पर बैठ गया और टाँगों से सिंदबाद की गर्दन जकड़ ली।

उसने अब भी ढीली न की। सुबह मुँह अँधेरे ही वह मुझे चिकोटियाँ काट-काटकर जगाने लगा और फिर दिन-भर उसने एड़ियाँ मार-मारकर मुझे घोड़े की तरह घुमाया। कई दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा।

यात्रियों के पत्थरों के बदले बन्दरों ने नारियल तोड़कर फेंकने शुरू किए

मैंने यात्रियों को अपनी दुःख-कथा सुनाई, जिसे सुनकर उन्होंने आश्चर्य से दाँतों तले अंगुली दबा ली। कप्तान ने मेरे साहस की बड़ी प्रशंसा की और मेरे आराम का सब प्रबन्ध कर दिया।

कुछ दिनों में हमारा जहाज एक टापू में पहुँचा, जहाँ के मकानों के कोने समुद्र के भीतर तक बढ़े हुए थे। यह टापू जहाज के बहुत-से यात्रियों का जाना-पहचाना हुआ था। एक यात्री मुझे उस टापू की सैर करवाने के लिए अपने साथ ले गया। उसने वहाँ के कई शहरियों से मेरा परिचय कराया और मुझे बताया कि वे लोग नारियल बटोरा करते हैं। उसने एक बोरी मेरे हाथ में पकड़ाते हुए कहा यदि असली अर्थों में इस टापू की सैर करना चाहते हो तो यह लो बोरी और लोगों के साथ-साथ चलते जाओ। ध्यान रहे कि यदि एक लमहे के लिए भी तुम इनसे बिछुड़ गए तो तुम्हारी जान को खतरा हो सकता है!

यह कहकर उसने मुझे रास्ते के लिए भोजन भी दिया और हम उन लोगों के साथ चल पड़े।

हम नारियल के एक घने जंगल में रुके। वृक्ष इतने ऊँचे और उनके तने इतने चिकने थे कि चोटी तक चढ़कर नारियल तोड़ना बिलकुल असम्भव दिखाई देता था। उस जंगल में वनमानुषों की भरमार थी। हमें देखकर वे लोग दुम दबाकर भागे और इस तेजी से वृक्षों पर चढ़ गए कि हम देखते ही रह गए।

व्यापारियों ने पत्थर बटोर-बटोरकर वृक्षों पर बैठे हुए वनमानुषों पर फेंकने आरम्भ कर दिए। उनकी देखादेखी मैं भी पत्थर फेंकने लगा। इसके बदले में वनमानुष नारियल तोड़-तोड़कर हमें मारने लगे। हम लोग साथ ही नारियल उठा-उठाकर अपनी बोरियों में भरते जाते थे और साथ ही साथ वनमानुषों पर पत्थर फेंकते जाते थे ताकि बदला लेने के लिए वे हम पर अधिक से अधिक नारियल फेंकें। होते-होते हमने नारियलों से अपनी-अपनी बोरियाँ भर लीं और जहाज पर चढ़कर आगे चले।

रास्ते में कुमारी नाम का एक द्वीप पड़ता था, जहाँ की मिर्चें और खुशबूदार लकड़ी बहुत प्रसिद्ध हैं। मैंने अपने नारियल बेचकर उनके बदले में मिर्चें और लकड़ी खरीद लीं। वहीं कुछ गोताखोरों से मेरा परिचय हो गया, जिन्हें मैंने मजदूरी पर गोता लगाने के लिए राजी कर लिया। मेरा भाग्य अच्छा था। पहले गोते में ही समुद्र में से बड़े बढ़िया मोती उनके हाथ लगे।

इधर मुझे अपने वतन की याद आने लगी थी, इसलिए मैं एक जहाज पर चढ़कर बगदाद के लिए रवाना हो गया। पहले की तरह मैंने अपनी कमाई का दसवाँ हिस्सा दीनों और असहाय लोगों में बाँट दिया। शेष मेरे पास इतना धन बच रहा कि आयु-भर उसे खाता रहता तो भी वह समाप्त होने में न आता।

यह कहकर सिंदबाद ने हिन्दबाद को एक सौ रुपये की थैली देकर कहा   यह लो, कल फिर आने का निमंत्रण देता हूँ।

सिंदबाद की छठी यात्रा

छठे दिन हिन्दबाद के छोटे बेटे ने कहानी आरम्भ होने से पहले ही सिंदबाद से कहा   मैं एक बात पूछना चाहता हूँ।

सिंदबाद ने कहा   पूछो, क्या?

लड़के ने कहा   पिछली यात्राओं में इतनी विपत्तियाँ उठाकर भी क्या आप कभी घबराए नहीं?

सिंदबाद बोला   निश्चय ही मेरी जगह यदि कोई और व्यक्ति होता तो इतनी जहाज-दुर्घटनाएँ, ऐसे भयानक राक्षसों से सामना और भूख-प्यास को देखकर वह कभी का घबरा गया होता, किन्तु मेरे लिए तो यह सब कुछ खेल बन चुका था। बिना इनके मुझे चैन ही न पड़ता था। यही कारण है कि वर्ष भर बगदाद में रहने के पश्चात मैंने फिर छठी बार व्यापारिक यात्रा को कमर कस ली। मेरे मित्रों ने बहुत समझाया कि तुम्हें धन की कमी नहीं, फिर तुम्हें क्या पड़ी है कि देश-देश में भटकते फिरो? किन्तु मैंने किसीकी एक न सुनी और एक दिन जहाज पर सवार होकर चल ही दिया।

हमारा जहाज फारस से होता हुआ हिन्दुस्तान पहुँचा। वहाँ मुझे पता चला कि एक जहाज बहुत लम्बा चक्कर लगाने को तैयार खड़ा है। मैं उसी जहाज पर सवार हो गया। कई दिनों तक तो हमारा जहाज ठीक चलता रहा; किन्तु कप्तान की भूल से बाद में उल्टे रास्ते जा पड़ा। मल्लाहों और कप्तान तक को इतना भी अनुमान न रहा कि हमारा जहाज किस द्वीप के पास है और किस दिशा में जा

रहा है। इस बात से कप्तान इतना दुःखी हुआ कि उसने जहाज चलाना छोड़कर दोनों हाथों से अपना सिर पीट लिया। वह पागल-सा होकर ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर चक्कर काटने लगा। उसने अपनी दाढ़ी नोच डाली और पगड़ी के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। हम सबने घबराकर पूछा कप्तान साहब! कुछ बात भी तो बताइए। आखिर आपके इतने निराश होने का कारण क्या है?

कप्तान ने कहा कुछ न पूछो! बस, अब हम और तुम घड़ी-दो घड़ी के ही मेहमान हैं। हमारा जहाज एक बहुत ही भयानक धारा में फँस चुका है और इसमें से इसके निकलने की मुझे कोई आशा दिखाई नहीं देती। भगवान से प्रार्थना करो कि वही इस मुसीबत से हमें पार लगाएँ।

यह कहकर कप्तान ने लंगर डालने की आज्ञा दी। यात्री इतने उतावले थे कि वे बादबानों की ओर स्वयं भागे। किन्तु अनाड़ियों के हाथों ने भलाई के स्थान में बुराई ही कर दी। रस्से टूट गए और जहाज लहरों में पड़कर एक पहाड़ी चट्टान से जा टकराया और टुकड़े-टुकड़े हो गया। जहाज टूटने पर हमें आशा न थी कि एक तिनका भी बच सकेगा। किन्तु विपरीत इसके, एक-एक यात्री और हमारा ज़रा-ज़रा-सा माल बच गया।

जिस स्थान पर यह दुर्घटना हुई, वास्तव में वह बड़ा खतरनाक था क्योंकि पहाड़ी के दामन में हमें टूटे हुए जहाज, कीमती माल और यात्रियों की हड्डियाँ इधर-उधर बिखरी हुई दिखाई दीं। हमारी आँखों के सामने यह डरावना दृश्य था और कानों से हमने सुना कि कप्तान कह रहा है सब अपनी-अपनी कब्रें आप बना लो, क्योंकि इस विपत्ति से अब हमारा बचना असम्भव है। यह सुनकर हमारा लहू सूख गया।

ऐसे कुसमय में भी मैंने आशा न छोड़ी और चारों ओर देखने लगा। उस स्थान में मुझे कई विचित्रताएँ दिखाई दीं। वैसे तो नदियाँ आकर समुद्र में गिरती हैं, किन्तु वहाँ एक स्वच्छ पानी की धारा समुद्र में से निकलकर एक अंधी गुफा में जा गिरती है। गुफा का मुँह पर्याप्त चौड़ा है और वहीं से निकलता हुआ एक स्रोत समुद्र में भी गिरता है। पहाड़ी के आसपास पारदर्शी पत्थरों, बिल्लौरों और हीरे-मोतियों के ढेर पड़े हैं। चन्दन की लकड़ी का तो कोई अन्त ही नहीं।

यदि कोई जहाज इस घेरे से कुछ दूर भी आ निकले तो भी वह बचता नहीं क्योंकि वहाँ पानी की धारा बहुत तेज है। जहाज टूट जाने पर यात्री न तो समुद्र के रास्ते तैरकर बच सकते हैं और पहाड़ी पर चढ़ने की तो कोई सम्भावना ही नहीं। इसलिए हम लोग कई दिनों तक आशा और निराशा में झूलते हुए पहाड़ी के दामन में बैठे रहे और मरने को तैयार हो गए। हाँ, हमने बुद्धिमत्ता अवश्य की कि जहाज से उतरते ही अपने खाने-पीने का सामान बराबर-बराबर बाँट लिया, ताकि चाहे तो कोई उसे जल्दी समाप्त कर दे या धीरे-धीरे खाए। खैर, मैं अपना हिस्सा बड़ी किफायत से खर्च करता रहा, इसलिए मैं सब यात्रियों के बाद तक जीता रहा। जब मेरे अंतिम साथी ने साँस तोड़ी तब मेरे पास भी नाममात्र को भोजन बच रहा था। मैं भी यह सोचकर कि इस अंत समय में मेरी शवक्रिया करनेवाला कोई नहीं, अपने हाथों अपनी कब्र खोदने लगा। किन्तु ईश्वर को कुछ और मंजूर था, इसलिए मुझे यह विचार आया कि क्यों न मैं उस धारा के साथ बहकर गुफा तक पहुँचूँ? हो सकता है कि बचाव का कोई रास्ता निकल आए।

कुछ देर तक खड़ा-खड़ा मैं नदी की ओर देखता रहा। मैंने

सोचा यह धारा धरती के भीतर ही भीतर बह रही है लेकिन कहीं न कहीं इसके निकलने की जगह भी होनी चाहिए। हो सकता है कि धारा में बहता हुआ तख्ता किसी बस्ती में जा पहुँचे। अन्यथा अधिक से अधिक यही होगा कि वह रास्ते में चकनाचूर हो जाएगा। आखिर मरना तो यहाँ भी है। क्यों न एक बार यत्न करके देख ही लूँ?

मैंने जहाज का एक बड़ा-सा तख्ता खींच लिया और उसपर जितने हो सके हीरे-जवाहरात लाद लिए। डोंगियों की तरह के दो चप्पू लेकर मैं उस तख्ते को खेता हुआ गुफा की ओर ले चला।

धीरे-धीरे प्रकाश गुम हो गया और धारा में बहता हुआ मैं घने से घने अन्धकार में घुसता चला गया। एक जगह छत इतनी नीची थी कि मैं टकराते-टकराते बचा। सारे रास्ते में मैंने कम से कम खाकर निर्वाह किया ताकि मेरा भोजन अधिक दिनों तक चल सके। किन्तु मेरी सब कंजूसी व्यर्थ गई, क्योंकि आखिर सारा भोजन समाप्त हो ही गया और भूख के कारण मैं बेहोश हो गया।

मैं कब तक इस दशा में रहा, नहीं जानता किन्तु जब होश में आया तो मैंने अपने-आपको हब्शियों से घिरा हुआ पाया और तख्ते को एक मैदानी दरिया के किनारे वृक्ष के तने के साथ बँधा हुआ। मैंने सिर-पैर का बल लगाकर दोनों हाथ जोड़े और हब्शियों को नमस्ते की। यह देखकर वे आपस में कुछ बातें करने लगे, जो मुझे कुछ भी समझ न आईं। गुफा की मुसीबत के बाद अपने को हब्शियों के हाथ पड़े देखकर मैं गुनगुनाने लगा।

राही! मुसीबतों में भी मधुर गीत गा ले, तू मधुर गीत गा ले,
करके सभी उम्मीदें भगवान के हवाले।
जिसने तुझे बनाया जिसने तुझे फँसाया,

राही! बुला उसी को आकर तुझे निकाले, तू मधुर गीत गा ले॥

उनमें से एक हब्शी ने मेरे गीत का भाव समझ लिया और तनिक मेरे समीप आकर बोला

भाई! डरो मत। हम इस देश के रहनेवाले हैं और हमारे खेतों में उसी दरिया का पानी सींचा जाता है, जिसे तुम पहाड़ों के आँचल में पीछे छोड़ आए हो। हमने तुम्हारे तख्ते को धार में बहते देखा और तुम्हें उठाकर बाहर निकाल लाए। अब तुम खतरे से बिलकुल बाहर हो। अब बताओ कि तुम कौन हो और किस प्रकार इस धारा में आ पड़े?

हब्शी के मुँह से सहानुभूति के दो शब्द सुनकर मुझे धैर्य मिला और मैंने खाने के लिए कुछ माँगा। उन्होंने मुझे कई प्रकार के व्यंजन, चटनियाँ और खट्टे-मीठे पदार्थ खाने को दिए। तृप्त होकर मैंने उन्हें अपनी यात्रा की कहानी सुनाई। उसे सुनकर हब्शियों को इतना आश्चर्य हुआ कि वे मुझे दुबारा कहानी सुनाने के लिए अपने राजा के पास ले चले। कुछ हब्शी मुझे घोड़े पर बिठाकर आगे-आगे चलने लगे और कुछ तख्ते पर से मेरा सामान उठाकर पीछे-पीछे। चलते-चलते हम उस द्वीप की राजधानी में पहुँचे। द्वीप का नाम मुझे श्रीनदीभ बताया गया। राजा के सामने आते ही मैंने उसी प्रकार घुटनों के बल झुककर राजा को प्रणाम किया, जैसे कि बगदाद में राजाओं को प्रणाम करने का रिवाज था। राजा ने दोनों हाथ बढ़ाकर मुझे उठा लिया और अपनी दाईं ओर बिठाया। उसने मेरी कहानी का एक-एक शब्द बड़ी उत्सुकता से सुना।

कहानी समाप्त होते ही हब्शी लोग तख्ते-सहित मेरा सारा सामान भीतर ले आए। मैंने वे गठरियाँ राजा के सामने खोल दीं। राजा उन हीरों और मोतियों की प्रशंसा करते न थकता था।

साथ-साथ वह देखता जाता था और कहता जाता था कि मेरा सारा खजाना तेरे एक भी मोती का मुकाबला नहीं कर सकता।

अपने मोतियों के लिए राजा की इतनी प्रशंसा सुनकर सचमुच मैं बड़ा ही प्रसन्न हुआ। मैंने साष्टांग प्रणाम करके कहा राजाधिराज! यह मेरा सौभाग्य है कि मेरे लाए हुए ये तुच्छ मोती आपको इतने पसन्द हैं। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि आप रत्नों की ये सब गठरियाँ स्वीकार करें।

नहीं-नहीं, सिंदबाद! ऐसा नहीं हो सकता। मैं तुम्हारे रत्नों को हाथ भी न लगाऊँगा। उल्टा मैं तो तुम्हें कुछ उपहार अपने पास से देना चाहता हूँ। अभी तुम मेरे राज्य में कुछ दिन तक रहो। तुम स्वयं मेरी उदारता का परिचय पाओगे।

यह कहकर उसने अपने दरबारियों को आज्ञा दे दी कि मुझे किसी प्रकार की कमी न रहे। मुझे ठहरने के लिए बंगला भी दे दिया गया।

कुछ समय पश्चात मैंने राजा से स्वदेश की आज्ञा माँगी। राजा ने स्नेह-भरे शब्दों में कहा सिंदबाद! तुम्हें अपने से जुदा करने को जी तो नहीं चाहता, किन्तु तुम्हारे इष्ट मित्र तुम्हारे लिए व्याकुल होते होंगे, इसलिए मैं बड़ी प्रसन्नता से तुम्हें स्वदेश लौट जाने की आज्ञा देता हूँ। यह लो, मेरी ओर से यह तुच्छ-सा उपहार स्वीकार करो।

यह कहकर राजा ने एक सुनहरी पिटारी मेरी ओर बढ़ा दी। पिटारी में चार बहुमूल्य वस्तुएँ भरी थीं। उनमें एक थी हीरे को काटकर बनाई हुई कटोरी, जिसमें सफेद मोती भरे हुए थे। दूसरी वस्तु साँप की खाल थी, जिसके कटाव सुनहरे और चमकीले थे। उस खाल में यह गुण था कि जो उसपर सोता वह दुःख-बीमारियों से बचा रहता। तीसरी चीज चन्दन और कपूर की लकड़ी के दो शेर

थे। चौथी चीज एक गुड़िया थी, जिसे गोद में लेने पर उसके होंठ हिलते और वह बातें-सी करती दिखाई देती थी, इसके अलावा राजा ने एक जोड़ी शाही पोशाक, दो मोतियों के हार और सोने-चाँदी के बर्तन मुझे देकर कहा   यह उपहार मेरी तरफ से अपने देश के राजा खलीफा हारूं अलरशीद को देना।

मैं राजा को तीन बार सिजदा (प्रणाम) करके वहाँ से चला। दरबारी लोग जहाज तक विदा करने आए। मैं कुछ दिनों के बाद बसरा के बन्दरगाह पर पहुँचा, श्रीनदीभ के राजा द्वारा भेजे उपहार पाकर खलीफा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने बीसियों प्रश्न करके उस देश का हाल पूछा।

इतना कहकर सिंदबाद ने एक सौ अशरफियों की थैली हिन्दबाद को दी और कहा   कल मेरी सातवीं और अन्तिम यात्रा का हाल सुनने आना।

सिंदबाद की सातवीं यात्रा

सातवें दिन हिन्दबाद और उसके बेटों के सामने कई प्रकार के भोजन परोसे गए। भोजन के अन्त में सिंदबाद ने अपनी सफेद दाढ़ी की ओर संकेत करते हुए कहा लड़को! एक दिन शाही बग्घी मेरे घर के सामने आकर खड़ी हुई और उसमें से एक दूत निकल कर मेरे पास आया। दूत ने सलाम बजाकर मुझसे कहा शाहंशाह सलामत खलीफा हारूं अलरशीद आपको याद करते हैं और उन्होंने आपको लिवाने के लिए शाही बग्घी भेजी है।

मैं शीघ्र ही खलीफा के सामने हाजिर हुआ और तीन बार प्रणाम करके बैठ गया। खलीफा ने कहा सिंदबाद! श्रीनदीभ की राजधानी की ओर से मित्रता का उपहार तुम्हीं मेरे पास लाए थे, इसलिए मैं चाहता हूँ कि मेरी ओर से भी तुम्हीं उपहार ले जाकर श्रीनदीभ के राजा को भेंट कर आओ।

मैंने सोचा छः बार तो मैं अपनी इच्छा से यात्रा कर ही चुका हूँ; चलो, एक बार खलीफा की इच्छा से ही सही।

मैंने श्रीनदीभ जाना मान लिया। खलीफा ने मुझे एक हजार अशरफियाँ खर्च के लिए साथ दीं। खलीफा का पत्र और उपहार लेकर मैं श्रीनदीभ की ओर चल दिया।

इस बार की यात्रा बहुत ही सुखद रही और मैं कुछ ही दिनों में श्रीनदीभ पहुँच गया। मैंने खलीफा का दिया हुआ उपहार और पत्र राजा के सामने रखकर कहा यह उपहार खलीफा हारूं अलरशीद

ने आपकी सेवा में भेजा है।

राजा ने बड़े प्रेम से उपहार ले लिया और एक-एक करके वस्तुओं को देखने लगा। इनमें एक जोड़ा रेशमी कपड़ों का था, जिसपर सलमे-सितारे का काम किया हुआ था और उसका मूल्य एक हजार अशरफी से कम न था। पचास रेशमी और एक सौ सफेद बोस्की की पोशाकें अलग थीं। एक सोने का फाला था जिसपर एक धनुषधारी का चित्र था, जो शेर पर बाण चलाने को तैयार बैठा था। इसके अलावा खिलौने और चाँदी-सोने के बर्तन भी दिए।

राजा मुझे कुछ दिनों तक अपने यहाँ ठहराना चाहता था, किन्तु स्वदेश लौटने की मेरी उत्कट इच्छा देखकर उसने जाने की आज्ञा दे दी। इस बार मैं रास्ते में किसी विपत्ति का मुकाबला करने को तैयार न था, किन्तु आदमी के चाहने से क्या बनता है? श्रीनदीभ से हमारा जहाज कुछ ही दूर पहुँचा होगा कि एक ओर से कुछ नावें तेजी से हमारी ओर बढ़ती हुई दिखाई दीं। उनपर हथियारबंद डाकू बैठे थे। उन्होंने आते ही आक्रमण कर दिया। जहाज में केवल व्यापारी और व्यापार का माल ही भरा था, इसलिए हथियारबंद डाकुओं का हम मुकाबला न कर सके। कई मल्लाह लड़ाई में मारे गए, कई घायल हो गए। मैंने और मेरे कुछ अन्य साथियों ने इतनी बुद्धिमानी की कि चुपचाप हार मान ली। वे हमें पकड़कर दूर के एक टापू में ले गए और वहाँ हमें गुलाम बनाकर बेच दिया।

संयोगवश, मैं धनी व्यापारियों के हाथ बिका। वे मुझे अपने घर ले गए। अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने को दिए और नौकर बनाकर मुझे रख लिया। एक दिन मेरे स्वामी ने मुझसे पूछा गुलाम! क्या तुम कोई काम-धंधा भी जानते हो?

मैंने कहा मालिक! मैं कोई कारीगर नहीं हूँ; मैं तो व्यापारी हूँ। मुझे डाकुओं ने पकड़कर आपके हाथ गुलाम बनाकर बेच दिया है।

मालिक क्या तुम धनुष-बाण से शिकार कर सकोगे?

मैं क्यों नहीं? जवानी के दिनों में मैं एक प्रसिद्ध निशानेबाज रहा हूँ।

यह सुनकर मालिक ने मुझे एक धनुष और कुछ बाण दिए और कहा मेरे साथ हाथी की पीठ पर बैठकर जंगल में शिकार के लिए चलो।

जंगल बहुत घना था। एक स्थान पर हाथी खड़ा करके मालिक ने मुझे कहा उस सामने वाले वृक्ष पर चढ़ जाओ और जो भी हाथी नीचे से गुजरे, उसे मार गिराओ।

यह कहकर मालिक ने रात के लिए खाना-पीना मुझे दिया और आप अपने घर चला गया।

रात-भर कोई हाथी न आया, किन्तु सूर्य निकलते ही हाथियों के झुंड के झुंड आते हुए दिखाई दिए। मैंने कई तीर चलाए, किन्तु निशाने पर एक न लगा, बहुत यत्न के बाद मैं एक हाथी को गिरा सका। यह देखकर अन्य दूसरे हाथी भाग खड़े हुए और मुझे नीचे उतरने का अवसर मिल गया। मैंने घर जाकर यह खुशखबरी अपने मालिक को सुनाई। मेरी इस सफलता पर मालिक बहुत प्रसन्न हुआ और उसी समय मुझे साथ लेकर जंगल में आया। उसने और मैंने, दोनों ने मिलकर एक गड्ढ़ा खोदा और हाथी को उसमें दबा दिया। कुछ दिनों बाद मांस सड़ गया और मालिक हाथीदाँत निकालकर ले गया।

दो महीने तक उसने मुझे हाथियों के शिकार पर लगाए रखा और प्रातः हर रोज मैं एक हाथी मार ही लिया करता था। एक दिन

मैं ऊँचे वृक्ष पर बैठा हाथियों के आने की प्रतीक्षा कर रहा था कि सौ-पचास हाथी गरजते हुए आए और आगे बढ़ जाने के बदले उसी वृक्ष के नीचे आकर रुक गए, जिसपर मैं बैठा था।

मुझे गौर से देखने के पश्चात् उनमें से सबसे बड़ा और मोटा-ताजा हाथी, जो शायद हाथियों का राजा था, आगे बढ़ा और अपनी सूँड से तने को लपेटकर जोर के झटके दिए। वृक्ष चरमराता हुआ गिर पड़ा और उसके साथ मैं भी। हाथी ने सूँड से पकड़कर मुझे अपनी गर्दन पर बिठा लिया। मैं एक मुर्दे के समान चुपचाप पड़ा रहा। वह हाथी सबसे आगे चला और शेष हाथी पीछे पंक्ति बनाकर।

एक जगह पहुँचकर हाथी ने मुझे नीचे उतार दिया और सब हाथियों को लेकर एक ओर को चला गया। उन्हें आँखों से ओझल देखकर मैं उठा तो देखा कि मैं हाथीदाँत के एक बहुत बड़े ढेर पर खड़ा हूँ। मुझे यह समझते देर न लगी कि यह हाथियों का कब्रिस्तान है और बिना हाथियों को मारे यहाँ से अनगिनत हाथी-दाँत मिल सकते हैं।

थोड़ी देर के बाद मैं शहर को अपने मालिक के घर की ओर चल पड़ा। रास्ता तय करने में मुझे एक दिन और एक रात लगा। मुझे देखकर वह बोला सिंदबाद! मुझे तुम्हारी बड़ी चिन्ता थी। जब मैंने उस पेड़ को उखड़ते हुए और धनुष-बाण को धरती पर बिखरे हुए पाया तो मैंने समझ लिया कि अब तुम कभी न लौट पाओगे।

मैंने मालिक को थोड़े में सारी बात कह सुनाई।

दूसरे दिन हम दोनों उस जगह को देखने के लिए चले। वहाँ जाकर हमने अपने पालतू हाथी पर बहुत-से हाथीदाँत लाद लिए

और शहर को लौट आए। घर आकर मेरे मालिक ने मुझे देखते हुए कहा   मेरे प्यारे सिंदबाद! मैं तुम्हें एक भेद की बात कहता हूँ।

सुनो! पिछले कुछ वर्षों में मैंने बहुत-से गुलाम जंगल में हाथीदाँत लाने के लिए भेजे, किन्तु हाथियों ने उन सबको मार डाला। यद्यपि मैं हर एक गुलाम को सावधान रहने की चेतावनी पहले से ही दे देता था, तो भी हाथी जैसे सयाने जन्तु के हाथों कोई भी न बच सका। और उन्होंने एक-एक करके सब गुलामों को मार डाला। तुम उनके हाथों पड़कर भी सकुशल लौट आए हो, इसलिए मेरा निश्चय है कि अवश्य तुम्हारे बचाने में भगवान का भी हाथ है। साथ ही, तुम इतने हाथीदाँत खोज लाए हो कि उनके मूल्य से हम मालामाल हो जाएँगे। जाओ! मैं तुम्हें गुलामी से आजाद करता हूँ और आज से तुम मेरे भाई हुए। अब मैं तुम्हें निर्धन नहीं रहने दूँगा।

मैंने कहा   मालिक! आपकी कृपा के लिए मैं कृतज्ञ हूँ, किन्तु यदि आप सचमुच मुझे इनाम देना चाहते हैं तो मुझे अपने देश लौट जाने की आज्ञा दे दीजिए। मेरे लिए यही बड़े सौभाग्य की बात है कि मैं आपकी और आपके नगर की इतनी सेवा कर सका हूँ।

उसने कहा   मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर दूँगा। अनुकूल हवा चलते ही बहुत-से व्यापारिक जहाज हाथीदाँत का माल भरने इस टापू पर आएँगे। उनमें से किसी जहाज पर बिठाकर मैं तुम्हें तुम्हारे देश भिजवा दूँगा।

अनुकूल समुद्री हवा चलने की प्रतीक्षा में मैं अपने मालिक या अपने मित्र के घर रहता रहा। इस दौरान में, हम कई बार हाथियों के कब्रिस्तान में गए और जी भरकर हाथीदाँत इकट्ठे किए, तब तक कुछ जहाज भी टापू में आ पहुँचे। मेरे मित्र ने आधे हाथीदाँत साथ देकर मुझे एक जहाज पर सवार करवा दिया।

रास्ते में मैं टापुओं में हाथीदाँत बेचता और उनके बदले वहाँ का प्रसिद्ध माल भरता हुआ बगदाद पहुँचा। यह रास्ता इतना लम्बा था कि मैं यात्रा से उकता गया और फिर कभी अपने देश से बाहर जाने का नाम न लिया। तब से मैं इसी महल में सुख-चैन से रहता हूँ।

❑❑❑

देश-विदेश की सचित्र लोककथाएं

हिमाचल की लोककथाएं
बिहार की लोककथाएं
राजस्थान की लोककथाएं
बंगाल की लोककथाएं (पुरस्कृत)
हरियाणा की लोककथाएं (पुरस्कृत)
पड़ोसी देशों की लोककथाएं
असम की लोककथाएं
पंजाब की लोककथाएं
मध्यप्रदेश की लोककथाएं
उत्तर प्रदेश की लोककथाएं

प्रेमचन्द की सरल, सचित्र बाल-कहानियां

परीक्षा
बूढ़ी काकी
सुजान भगत
गुल्ली डंडा
रानी सारन्धा
बड़े घर की बेटी
शतरंज के खिलाड़ी
दो बैलों की कथा
माँ की ममता
शिकारी राजकुमार
मन्दिर
रामलीला
पंच परमेश्वर
रामकथा
मेरी कहानी
नमक का दरोगा
ईद का त्योहार
सबसे बड़ा तीर्थ
कुत्ते की कहानी
जंगल की कहानियां

रवीन्द्रनाथ टैगोर की सरल बाल-कहानियां

भोला राजा
काबुलीवाला
पारसमणि
मास्टरजी
तोते की कहानी
राजा का न्याय

'स्वदेश-परिचय' पुस्तकमाला

डॉ. भगवतशरण उपाध्याय

भारत की कहानी (पुरस्कृत)
भारतीय भवनों की कहानी (पुरस्कृत)
भारतीय संगीत की कहानी (पुरस्कृत)
भारतीय संस्कृति की कहानी (पुरस्कृत)
कितना सुन्दर देश हमारा (पुरस्कृत)
भारतीय चित्रकला की कहानी
भारतीय नगरों की कहानी
भारतीय साहित्यों की कहानी
भारतीय नदियों की कहानी
हमारे पड़ोसी (पुरस्कृत)

ISBN 81-7094-684-0

विज़न बुक्स